अप्रैल 2020

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 नवम् अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

21 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 रोजगार समाचार

31 आर्थिक समीक्षा 2019-20 : अर्थव्यवस्था के निष्पादन का लेखा-जोखा

39 केन्द्रीय बजट 2020-21 : आयकर ढाँचे में व्यापक परिवर्तन

43 विज्ञान समाचार

45 युवा प्रतिभा

46 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

47 सारभूत तत्व कोष

50 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

53 राजस्थान : वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

लेख

54 सामाजिक लेख—बाल अधिकार : समस्या व निवारण

55 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन—रायसीना संवाद और भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका

57 कॅरियर लेख—कृषि विज्ञान में कॅरियर

58 कृषि लेख—जलवायु परिवर्तन के अनुरूप संरक्षित खेती

हल प्रश्न-पत्र

60 एस.एस.सी. कम्बाइंड हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2018 (प्रथम चरण) (5-7-2019)

68 उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)

84 बिहार पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2019

89 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग कनिष्ठ सहायक परीक्षा, 2019

96 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग कम्प्यूटर ऑपरेटर परीक्षा, 2016

103 हरियाणा एस.एस.सी. क्लर्क परीक्षा, 2019

108 आगामी राजस्थान पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

118 आगामी राजस्थान पटवार हेतु विशेष हल प्रश्न

127 क्रीड़ा जगत्

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

सच्चे भारतीय बनिए

प्रत्येक नागरिक को यह समझ लेना चाहिए कि वह भारतीय है और इस नाते उसे देश में सभी अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन कतिपय कर्तव्यों के साथ.

– सरदार बल्लभ भाई पटेल

भारत की आर्थिक-सामाजिक-राज-नीतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति में यूँ तो अनेक तत्व बाधक रहे हैं, लेकिन इनमें से दो कारकों की भूमिका अपेक्षाकृत अधिक रही है. प्रथम, सार्वजनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार जिसने सार्वजनिक संसाधनों का दुरुपयोग किया है. द्वितीय, 200 वर्षों से अधिक की दासता से ग्रसित अंग्रेजों और अंग्रेजी के प्रति निष्ठावान मुट्ठीभर लोग. भ्रष्टाचार ने आर्थिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद एक मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में भारत को स्थापित नहीं होने दिया तो दूसरी ओर पाश्चात्य दर्शन, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा से अति प्रभावित अंग्रेज़ीदाँ लोगों ने भारतीय दर्शन, आदर्श, शताब्दियों से अर्जित मूल्यों को स्थापित नहीं होने दिया. परिणामतः हम आज भी भारतीय बनने के लिए संघर्षरत है.

जिन लोगों की जानकारी में अथवा जिनकी शह एवं असावधानी से ऐसा सम्भव हो सका, क्या हम उन्हें भारतीय कह सकते हैं ? वे लोग वस्तुतः न भारत की मिट्टी से प्रेम करते हैं, न भारतीयता को अपनी विरासत मानते हैं और न भारत की स्वतन्त्रता की कीमत जानते हैं. उन्हें तो केवल धन चाहिए, किसी भी कीमत पर. इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार हैं. केवल कश्मीर में ही नहीं, इस श्रेणी के व्यक्ति देश के अन्य भागों में भी विद्यमान हो सकते हैं. उन्हें देशद्रोही कहकर संतोष कर लेना पर्याप्त नहीं होगा, हमें इस कुप्रवृत्ति एवं दूषित मनोवृत्ति की जड़ तक जाना होगा.

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त भारत के कर्णधार देश के नव-निर्माण की योजना बनाते समय उसके 'भारतीयता' तत्व की उपेक्षा कर गए थे. प्रमाण यह है कि उन्होंने संविधान में देश का नाम भारत न लिखकर इण्डिया दैट इज भारत लिख दिया. फलतः भारत के निवासी अपने को भारतीय न समझकर इण्डिया के निवासी समझने लगे हैं.

भारत के भूतपूर्व मानव-संसाधन विकास शिक्षा मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने शिक्षा के क्षेत्र में भारतीयकरण और अध्यात्मीकरण का प्रस्ताव किया था. वह विवाद का विषय बन गया था. इस प्रस्ताव के प्रबलतम विरोधी वे लोग रहे हैं, जो अपने को धर्मनिरपेक्ष राजनीतिज्ञ कहते हैं. उनके साथ आला अफसर तथा पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुए वे भारतीय भी हैं, जो अपने को अंग्रेजों का वंशज प्रमाणित करने के लिए प्रतिपल प्रयत्नशील बने रहते हैं. वे भारतीय वेशभूषा, भारतीय भाषा, भारतीय रहन-सहन, खान-पान आदि सबसे परहेज करते हुए देखे जा सकते हैं. यह देखकर दुःख होना स्वाभाविक है कि हमारा युवावर्ग अंग्रेजीयत के रंग में रंगा हुआ दिखाई देता है. यह वर्ग अपनी भाव-भंगिमा इस प्रकार बनाता है कि कहीं कोई उन्हें भारतीय न समझ लें. ऐसी दास मनोवृत्ति वाले व्यक्ति यदि यह सोचने लगें कि कश्मीर भारत में रहे अथवा न रहे, क्या अन्तर पड़ता है, तो क्या आश्चर्य है?